फसलों का कीट अवरोध

मटका अवरोध– यह दवा विभिन्न प्रकार के मच्छर प्रजाति के रस चूसने वाले कीटों को नश्ट करती है या दूर भगाती हैं जैसे एफिड जेसिड लीफ माइनर, सफेद मक्खी, आदी। यदि अवरोध का इस्तेमाल हर 7 से 10 दिन में एक बार किया जाये तो इन रस चूसने वाले कीटों से आसानी से बचा जा सकता हैं।

तैयार करने का विधि– मिटटी के पाँच मटके ले। प्रत्येक मटके मे 1 – 1 लीटर गोमूत्र डाले। गोमूत्र भरे एक मे नीम के पत्ते, दूसरे मे करंज के पत्ते, तीसरे मे सरिफा के पत्ते, चौथे मे अकंद के पत्ते, पांचवें मे बेल के पत्ते 50 ग्राम डाले। मटकों को अच्छी तरह ठांककर एक छायादार स्थान पर 20 से 30 दिनों तक रख कर सड़ने दें। 20 दिन बाद मटकों से पत्ते छानकर निकल दें। मटकों का गोमूत्र एक वर्तन मे डालकर उबालें जब तक इसमे से झाग फेंकने लगे। पूरे झाग को निकल दें एवं इसमें 50 ग्राम लहुसुन पिसा डालें एवं ठंडा होने दें।

प्रयोग विधि– अवरोध को एक लीटर पानी में 5 मिली डालकर छिड़काव किया जाता हैं। इसे हर 7 – 10 दिन में पुनः छिड़काव करना चाहिए।

फफुंदि के लिये अवरोधक– कइ बार पौंधो में फफुंदि की बीमारियां आ जाती हैं. ब्लाइटस वगैरह जो हवा में फैलती हैं और पत्तो को जलाती हैं या सूखा देती हैं। इसे रोकने के लिये बबुल और तुलसी के पत्तों का रस तैयार करना चाहिये।

तैयार करने का विधि– एक मिट्टी की मटका में एक लीटर गोमूत्र लिया जाता हैं उसमें 100 ग्राम बबुल एवं 50 ग्राम तुलसी के पत्तो डाले एवं 20 तक सड़ाया जाता हैं। फिर पत्ते निकल कर प्रयोग करे।

प्रयोग विधि– अवरोध को एक लीटर पानी में 10 मिली डालकर छिड़काव किया जाता हैं। इसे हर 7 – 10 दिन में पुनः छिड़काव करना चाहिए।

इल्ली., मकड़ी, बग के लिये अवरोध– एक वर्तन में आधा लीटर नीम का तेल, आधा लीटर करंज का तेल को मिलाकर 100 ग्राम वायवडिंग (आयुर्वेदिक) पिसकर डाली जा सकती है। फिर इस मिश्रण को 2–3 दिन तक रहने दिया जाता हैं तब तक वायवडिंग तेल में घुल जाता है इस प्रकार दवा तैयार होती हैं।

प्रयोग विधि– अवरोध को एक लीटर पानी में 5 से 10 मिली डालकर छिड़काव किया जाता हैं। इसे हर 7 – 10 दिन में पुनः छिड़काव करना चाहिए। यह दवा चूंकि तेलीय है, अतः यह पानी में अच्छी तरह नहीं घुलती है अतः इसे घोलने के लिये थोड़ा सा साबुन पानी का घोल भी मिलाना चाहिये जो दवा को फाड़कर पानी में मिला देगा।

आशीष कुमार दास